perception.

प्रत्यक्षण के स्वरूप की व्याख्या करने के लिए Gibson ने एक उपागम का प्रतिपादन किया जिसे Gibsonian approach कहा जाता है। Gibson का उपागम बिल्कुल ही सरल है। Gibson का मत है कि पर्यावरण के उद्दीपक में पर्याप्त सूचनाएं मौजूद होती हैं। अतः प्रत्यक्षण में वस्तुओं के गुणों या विशेषताओं पर व्यक्ति को अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि यह आसानी से निश्चित किया जा सके कि प्रत्यक्षण के लिए वस्तु की कौन विशेषता अधिक महत्वपूर्ण है। अतः इस सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि प्रत्यक्षण का निर्धारण प्रत्यक्षणकर्ता के गुणों के आधार पर न होकर वस्तु (जिसका ~~प्रत्यक्ष~~ प्रत्यक्षण व्यक्ति सीधे करता है) के गुणों या विशेषताओं के आधार पर होता है। यही कारण है कि Gibson के प्रत्यक्षण सिद्धांत को प्रत्यक्षण का प्रत्यक्ष सिद्धांत (Direct theory) कहा जाता है।

Gibson का मत था कि प्रत्यक्षण बिल्कुल ही प्रत्यक्ष होता है। जैसे:- हम लोग उद्दीपक या वस्तु के गुणों के आधार पर स्पष्टतः कह सकते हैं कि वह वस्तु हमसे कितनी दूरी पर है। परिणाम हम जो बातें ~~सी~~ सीख चुके होते हैं उसके आधार पर उस वस्तु की दूरी के परिकलन ~~करके~~ करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस तरह से किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करने में व्यक्ति को व्यक्ति को काफी अधिक आँकड़ों की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि सिर्फ

उद्दीपक की विशेषताओं के आधार पर वह अपने प्रत्यक्षण को तीक्ष्ण कर लेता है। इसके लिए किसी फैन्सी सिद्धांत जिसमें तर्क गढ़न आदि हो की कोई जरूरत नहीं है अतः प्रत्यक्षण के बारे में Gibson द्वारा प्रतिपादित विचारों की सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:--

(i) प्रत्यक्षण का स्वरूप सरल एवं प्रत्यक्ष होता है।

(ii) इसी तरह से प्रत्यक्षण का आधार उद्दीपक की विशेषता ही होती है।

(iii) प्रत्यक्षण में प्रत्यक्षणकर्ता से संबंधित चरों का जैसे उसकी आवश्यकता, अभिप्रेरणा, अभिरुचि आदि का कोई महत्व नहीं होता है।

आलोचना :→

(i) कुछ आलोचकों ने Gibson द्वारा प्रतिपादित उपागम की आलोचना करते हुए कहा है कि Gibson का सिद्धांत जरूरत से ज्यादा सरल है।

(ii) कुछ आलोचकों का मत है कि Gibson ने प्रत्यक्षण की व्याख्या में एक साधारण सूझ बूझ से काम लिया है जिसमें वस्तुनिष्ठता तथा वैज्ञानिकता की काफी कमी है।

Scanned with CamScanner

मनुष्य पर किये गए अध्ययनों से पता चलता है कि गलत दिशा में set के निर्मित हो जाने पर समस्या का समाधान कठिन हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने चूहों पर कुछ यही संबंधित प्रयोग किये। प्रयोगात्मक समूह के चूहों में गलत set निर्मित किया गया और नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह के चूहों ने अपने समस्या का समाधान जल्दी कर लिया। Lewin (1935) ने भी इस विचार का समर्थन किया और कहा कि गलत set की अवस्था में गलत प्रक्रिया के प्रति Registent हो जाने से समस्या के समाधान में कठिनाई होती है।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि एक ओर set से समस्या के समाधान को सुविधा होती है तो दूसरी ओर गलत set से समस्या समाधान में बाधा पहुँचाती है। अतः समस्या के शीघ्र समाधान के लिए गलत set का निराकरण आवश्यक है। इसके लिए कई विधियों को उपयोग किया जा सकता है। Woodworth तथा Schoolburg (1976) ने दो विधियों को महत्वपूर्ण बताया। पहली विधि को Alternative assumption कहते हैं। इस विधि में प्रयोज्य को निर्देशन दिया जाता है कि वह बिना सोचे समझे प्रयास न करे। बल्कि समस्या के विभिन्न सम्भावनाओं पर विचार करने के बाद ही प्रयास आरंभ करे। इससे गलत set के विकसित होने की संभावना घट सकती है। दूसरी विधि को Rest Pause method

कहते हैं। उसके अथ प्रयोज्य गलत दिशा में
प्रयास करते जाता है तो प्रयोगकर्ता निर्देश
देता है कि यह प्रयास छोड़कर थोड़ी देर तक
हम आराम करें। इस विश्राम की अवस्था
में प्रयोज्य में सूझ का Incubation
विकसित हो सकता है और Blind
effect समाप्त हो सकता है। इसलिए इस
विधि को Incubation method भी
कहते हैं। यह विधि अधिक प्रभावशाली है।
जिसका सत्यापन अनेक प्रयोगात्मक
अध्ययनों से होता है।

Scanned with CamScanner